ANCIENT INDIAN HISTORY & ARCHAEOLOGY, PATNA UNIVERSITY, PATNA

आख्यान

PG / M.A. 3rd Semester

CC-12, Historiography, History of Bihar & Research Methodology

Dr. Manoj Kumar
Assistant Professor (Guest)
Dept. of A.I.H. & Archaeology,
Patna University, Patna-800005
Email- dr.manojaihcbhu@gmail.com

PATNA UNIVERSITY, PATNA

आख्यान

गाथा एवं नाराशम्सी के पश्चात वैदिक साहित्य में प्राप्त होने वाली तीसरी महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्री आख्यान है । ऋग्वेद की अनेक ऋचाये आख्यानों से पूर्ण हैं।

शुनः शेष तथा पुरूस्ता/पुरुर्रवा के आख्यान ऋगवैदिक मंत्रों में ही प्राप्त होते हैं । **डॉक्टर ओल्डेन वर्ग** के अनुसार ऋगवैदिक आख्यान गद्य-पद्यात्मक थे । पद्य भाग अधिक रोचक होने के कारण महत्वपूर्ण माना गया । कालांतर में संस्कृत साहित्य में चंपू शैली अर्थात गद्य-पद्य की मिश्रित रचना का विकास इन्हीं संवाद सूक्तों में हुआ ।

डॉक्टर विन्टरनित्ज़ इन्हें प्राचीन लोकजाति काव्य का उदाहरण मानते हैं । डॉक्टर विशंभर शरण पाठक का कहना है कि यह संवाद सूत्र कालांतर में ऐतिहासिक नाटकों और महाकाव्यों के स्रोत थे ।

ऋग्वेद में प्रमुख प्रमुख आख्यानों में पुरुर्रवा उर्वशी संवाद, यम - यमी संवाद विशेष रूप से उल्लेखनीय है । पंडित भगवत दत्त आख्यान शास्त्र को अत्यधिक प्राचीन मानते हैं । इन आख्यानों को राजसूय एवं अश्वमेध यज्ञ की समाप्ति पर आख्यान सुनाया जाता था । वायु पुराण में भी एक ऐसी ही आख्यान का उल्लेख आया है ।

आख्यान

ऐतरेय ब्राह्मण में एक पंक्ति है **"आख्यानविद् तदतत् सौपर्णाम इति आख्यान आचज्ञते"**।

अष्टाध्यायी की काशिकावृति, रामायण कथा महाभारत में भी अनेक आख्यान प्राप्त हैं। स्पष्टतः आख्यान ऐतिहासिक साहित्य में बिखरे रूप में है और वो भी मौखिक परंपरा में मिलते हैं। ये आख्यान लोकजीवन में आज भी सुने जा सकते हैं। साहित्य के अंतर्गत एक विशिष्ट रचना के रूप में इनका विकास हुआ और कालांतर में जब इतिहास का एक पृथक साहित्य के रूप में विकास हुआ तो इंसानों का समायोजन इसके अंतर्गत किया गया। आख्यान के अतिरिक्त प्राचीन भारतीय साहित्य के ऐतिहासिक परंपरा का एक महत्वपूर्ण अंग आख्यायिका है। इसका प्राचीनतम उल्लेख तैतिरीय आरण्यक में हुआ है। कात्यायन ने वार्तिक में आख्यायिका को नैतिक कथा बताया गया है और ब्राह्मण ग्रंथों के कुछ अंशों को आख्यायिका से संबंध एक ऐतिहासिक रचना माना है। कौटिल्य ने आख्यायिका को इतिहास का एक अंग स्वीकार करते हुए लिखा है **"पुराणं इतिवृत्ते आख्यायिका उदाहरणं धर्मशास्त्रचेति इतिहासः"**।

पतंजलि ने महाभाष्य में तीन आख्यायिकाओ का उल्लेख किया है। जिसमें सबसे महत्वपूर्ण वासवदत्ता (समनोतरा तथा मैमरथी)

आख्यान

बाणभट्ट इतिहास पुराण आख्यान को आख्यायिका के रूप में स्वीकार करते हैं। अमरकोश की टीका में आख्यायिका के लक्षण परिभाषा तथा उद्देश्य को स्पष्ट किया गया है। आख्यायिका परंपरा पर आधारित होती है अर्थात् आख्यायिका परंपरा पर आश्रित ज्ञान है। इतिहास पुराण के माध्यम से परंपरा के रूप में आख्यायिका को देखा जा सकता है। इसके अंतर्गत प्राचीन सत्य घटनाओं का विवरण मिलता है। जबकि कथा कल्पना प्रधान होती है। बाणभट्ट रचित कादंबरी एक उच्च कोटि की कथा का उदाहरण है। जबकि हर्षचरित विक्रमांकदेवचरित और पृथ्वीराज विजय आदि आख्यायिका के उदाहरण है। काव्यालंकार में आख्यायिका को वास्तविक चरित माना गया है। कामसूत्र नाटक आंख्यायिका का उल्लेख साहित्यिक विधा के रूप में किया गया है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि प्राचीन भारतीय इतिहास की एक विधा के रूप में यह एक उच्च कोटि के साहित्य की विशेषताओं से युक्त होना स्वाभाविक है। यह आधुनिक मानकों के अनुसार ऐतिहासिक ग्रंथ भले ही न हो किंतु यह निश्चित है कि आख्यान प्राचीन भारतीय इतिहास के निर्माण में पर्याप्त सामग्री उपलब्ध कराती है।